ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-1* February- 2021
Innovation The Research Concept

उत्तर प्रदेश के बौद्ध तीर्थ स्थल सारनाथ का ऐतिहासिक अध्ययन

Historical study of Sarnath, a Buddhist pilgrimage site in Uttar Pradesh

Paper Submission: 11/02/2021, Date of Acceptance: 23/02/2021, Date of Publication: 24/02/2021

अर्चना सिंह
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
हेमवती नन्दन बहुगुणाराजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
नैनी, प्रयागराज भारत

सारांश

गौतम बुद्ध और उनके विचारों ने सदियों तक भारत के और उसके बाहर के तमाम देशों के लोगों को सबसे अधिक प्रभावित किया और अपनी अमिट छाप छोड़ी। प्राचीन इतिहास में तिथियों का निर्धारण भी बुद्ध के जीवन–वृत्तान्त पर आधारित है। यही नहीं बुद्ध का जीवन काल ही वह सीमा–रेखा है। जो भारतीय इतिहास को ऐतिहासिक और प्राग्–ऐतिहासिक युगों मे बाँटता है। इससे यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि बुद्ध की जीवनी और उनके जीवन की घटनाओं से जुड़े स्थल भारत ही नहीं बल्कि तमाम दुनिया के लोगों के लिए कितने महत्वूपर्ण हैं। अतः इस शोध पत्र का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में स्थित भगवान बुद्ध के जीवन काल से जुड़े सारनाथ स्थल का परिचय देते हुए बौद्ध धर्म की जनवादी महत्ता को उजागर करना है जिससे समाज में अहिंसा और समानता की भावना स्थापित हो सकी।

For centuries, Gautama Buddha and his ideas influenced the people of India and beyond, and left an indelible mark on them. The determination of dates in ancient history is also based on the life history of the Buddha. Not only this, the lifeline of Buddha is the boundary line. Which divides Indian history into historical and pre-historic eras. From this, it can be estimated how important the places associated with the biography of Buddha and the events of his life are not only for India but for the people of all the world. Therefore, the purpose of this research paper is to highlight the democratic significance of Buddhism by introducing the Sarnath site associated with the life time of Lord Buddha located in Uttar Pradesh, which established the spirit of non-violence and equality in the society.

मुख्य शब्द : बौद्ध धर्म, धर्म चक्र प्रवर्तन, आहिसा, सत्य, अस्तेय, बोधिसत्यव, विहार, स्तूप, चैत्य, प्रतिमा आदि।
Buddhism, Dharma Chakra Pravartana, Ahisa, Satya, Asthaya, Bodhisatyava, Vihara, Stupa, Chaitya, Statue etc.

प्रस्तावना

बौद्ध धर्म का प्रत्यक्ष संबंध भगवान बुद्ध से है। बौद्ध तीर्थ स्थल का अवधारणात्मक तथा उद्विकासीय परिप्रेक्ष्य के आधार पर विश्लेषण किया जाए तो इसका सीधा संबंध भगवान बुद्ध जिन्होंने वाराणसी से 6.4 कि0मी0 उत्तर में सारनाथ में जो धर्म चक्र प्रवर्तन का पहला उपदेश दिया था। उस उपदेश का ही प्रतिफल माना जाता है। सारनाथ उत्तर प्रदेश का ही नहीं बल्कि सार्वभौमिक बौद्ध धर्म की आज भी तीर्थ स्थली है। उत्तर प्रदेश अत्यन्त प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संवाहक रहा। स्मृतियों एवं पुराणों की इस भूमि से अनेकानेक ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाएं सम्बद्ध है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के आदर्श मर्यादा पुरूषोत्तम राम, कृष्ण एवं बुद्ध की जन्मस्थली होने का श्रेय भी इसी प्रदेश को प्राप्त है। अपने ज्ञान का प्रसार करने के लिए महात्मा बुद्ध ने काशी की ओर प्रस्थान किया तथा ऋषिपत्तन (सारनाथ) पहुंचे।

सारनाथ

बौद्धों का अत्यन्त महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल सारनाथ वाराणसी से लगभग 6.4 कि0मी0 उत्तर में है। सारनाथ का प्राचीन नाम ऋषिपत्तन मृगदाव था। एक संस्कृत बौद्ध ग्रन्थ महावस्तु के अनुसार यहां के आश्रम में 500 ऋषि रहते थे और निर्वाण प्राप्ति के बाद उन्होंने यहीं अपना शरीर त्यागा था। इसी कारण से

इस स्थल का नाम ऋषिपत्तन पड़ा। 'मृगदाव' नाम का स्रोत एक पुरानी जातक है, जिसके अनुसार यहां के जंगलों मे मृगों के झुण्ड रहते थे, मध्य कालीन अभिलेखों मे इस स्थान का नाम धर्मचक्र अथवा सद्धर्म–चक्र प्रवर्तन–विहार मिलता है। आधुनिक नाम सारनाथ (सारंगनाथ) (मृगों का नाथ) से लिया गया प्रतीत होता है, जो कि निकटस्थ मंदिर में स्थापित महादेव का उपनाम है। बोध–गया में बोधि प्राप्ति के बाद सर्वप्रथम भगवान बुद्ध ने सारनाथ में अपने धर्म का उपदेश पंचवर्गीय भिक्षुओं को दिया था। इसे बौद्ध साहित्य में धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है। इस प्रकार सारनाथ वह स्थान बन गया जहां एक नए धर्म व भिक्षु संघ की नींव पड़ी, और इसके साथ ही सारनाथ बौद्धों का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल बन गया। सारनाथ से प्राप्त बौद्ध धर्म के सबसे प्राचीनतम अवशेष अशोक के काल के प्राप्त होते है, जब अशोक बुद्ध निर्वाण के लगभग दो सौ वर्ष बाद यहां आए थे। अशोक ने यहां पर कई स्मारकों का निर्माण करवाया। उनमें से प्रमुख है– धर्मराजिका स्तूप, सिंह–स्तंभ आदि । इस सिंह–स्तंभ का उपरी भाग आधुनिक 'भारत द्वारा अपने राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। उस पर बने धर्मचक्र को भारतीय झण्डे के मध्य स्थान दिया गया है।

ईसा पूर्व पहली –दूसरी शताब्दी में शुंग राज्य अस्तित्व में आया, परन्तु इस समय का कोई भी अभिलेख यहां प्राप्त नहीं हुआ है। पहली शताब्दी ईसा पूर्व में एक सुन्दर पत्थर की वेदिका या चारदीवारी धर्मराजिका स्तूप के चारों ओर बनायी गयी थी। जिसके सुन्दर स्तंभ यहां प्राप्त हुए हैं।

प्रथम शाताब्दी ईसवी के लगभग उत्तर भारत में कुषाण सम्राट कनिष्क के साम्राज्य की स्थापना के साथ ही बौद्ध धर्म ने धार्मिक और कलात्मक कार्यो में नये दौर में प्रवेशकिया। इस समय सारनाथ की पुनः उन्नति हुई। सारनाथ कनिष्क के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में मथुरा के त्रिपिटकाचार्य भिक्षु बल ने लाल बलुए पत्थर से निर्मित एक विशालकाय बोधिसत्व प्रतिमा स्थापित की। यह मूर्ति धर्मराजिका स्तूप के निकट प्राप्त हुई थी। उस समय सारनाथ पर सर्वास्तिवाद संप्रदाय के भिक्षुओं का नियंत्रण था और उन्होंने यहां कई विहार स्थापित किये थे।

सारनाथ का पूर्ण अभ्युदय तो गुप्तकाल में हुआ था। उस समय यह मथुरा के अतिरिक्त उत्तर भारत में कला का सबसे बड़ा केन्द्र था। सारनाथ से प्राप्त धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्र में बैठे हुए भगवान बुद्ध की भव्य मूर्ति देश की सबसे सुन्दर मूर्तियों मे से एक है। इसी समय धमेख स्तूप के ऊपर सुन्दर कलाकृतियों वाले प्रस्तर फलकों से आवरण किया गया। चीनी यात्री फाह्यान लगभग पाँचवी शताब्दी ईसवी में (चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में) सारनाथ आया था। और यहाँ कि एक बुद्ध मूर्ति पर ''देय धर्मोयम् कुमार गुप्तस्य'' लिख मिलता है, जिससे यह मूर्ति कुमारगुप्त के द्वारा दान की गई प्रतीत होती है।

हर्षवर्धन के शासन काल में नये धार्मिक क्रिया–कलापों का आर्विभाव हुआ तथा सारनाथ में स्थित पूर्ववर्ती काल की संरचनाओं का जीर्णोद्धार किया गया। पाल शासक महीपाल के शासन काल के 1026 ई0 के एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि स्थिरपाल तथा बसन्तपाल नामक दो भाइयों ने धर्मराजिका स्तूप तथा धर्मचक्र का जीर्णोद्धार किया तथा उन्होने अष्ट महास्थान शैल–गंधकुटी नामक एक नयें अलौकिक प्रस्तर मंदिर की भी स्थापना की।

सारनाथ का अन्तिम स्मारक गहड़वाल वंश के महाराजा गोविन्दचन्द्र देव (1114–1154 ई0) के काल का है जब उन्होंने कन्नौज,अयोध्या और काशी पर कब्जा कर लिया था। उनकी रानी कुमारदेवी बौद्ध उपासिका थीं उन्होने धर्मचक्र–जिन–विहार नामक एक विहार का निर्माण कराया था। इसके उपरान्त बौद्ध धर्म के केन्द्र के रूप में सारनाथ की प्रतिष्ठा समाप्त हो गई। एक लंबे समय तक सारनाथ का ज्ञान संसार को नहीं था। वह पुनः 1794 ई0 में प्रकाश में आया, जब बनारस के राजा चेतसिंह के दीवान बाबू जगत सिंह ने धर्मराजिकास्तूप को इमारती सामान की खोज में उधेड़ डाला। उस समय स्तूप के भीतर पत्थर की एक मंजूषा मिली थी। जिसमें बुद्ध के धातु अवशेष थे। उन्हें निकट की नदी गंगा में बहा दिया गया। और पत्थर की मंजूषा कलकत्ता के संग्रहालय में रखी हुई है। काशी के तत्कालीन अधिकारी श्री डंकन ने 1798 ई0 में इस खुदाई का वर्णन किया था, जिससे लोगों का ध्यान सारनाथ के ध्वंसावशेषों की ओर गया। उसके पश्चात् सन् 1836 ई0 में सर कनिंघम ने सारनाथ की खुदाई का कार्य अपने हाथों में लिया। उन्होंने चौखण्डी स्तूप की जांच–पड़ताल की, धम्मेख स्तूप को खोला और उसके भीतर से ''ये धर्म हेतु प्रभाव'', इत्यादि बौद्ध मंत्र से अभिलिखित एक शिलापट्ट प्राप्त किया। सन् 1851–52 ई0 में मेजर किट्टो ने खुदाई का काम कराया। उन्होंने मूलगन्धकुटी को खोजा, अशोक का स्तम्भ प्राप्त किया और चौखण्डी का पुनः निरीक्षण किया तथा भगवान बुद्ध की धर्मोपदेश मुद्रा वाली जग प्रसिद्ध मूर्ति उनके द्वारा ही प्राप्त हुई थी। सन् 1907 ई0 में सर जॉन मार्शल ने इस स्थल के उत्तरी व दक्षिणी भागों की खुदाई कराई और यहां पर कुषाण कालीन तीन विहार और 12वीं शताब्दी में कुमारदेवी के विहार को प्राप्त किया। सन् 1914–15 में एच0 हरग्रीवस ने कुमारगुप्त द्वितीय और बुद्धगुप्त के अभिलेखों को प्राप्त किया और अन्त में दयाराम साहनी ने सारनाथ में उत्खन्न कार्य कराया। इन उत्खननों से प्राप्त सारनाथ के स्मारकों मे तीन स्तूप, दो मंदिर, अशोक सिंह स्तम्भ और सात विहार प्रमुख हैं। इस प्रकार से सारनाथ में किए गए इन उत्खननों से प्राप्त बौद्ध धर्म से संबंधित अवशेषों के बाद से एक प्रमुख बौद्ध केन्द्र के रूप में सारनाथ का महत्व बढ़ गया।

इस प्रकार महात्मा बुद्ध के सारनाथ में प्रवेश के साथ ही उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का प्रवेश हुआ महात्मा बुद्ध सारनाथ से वापस उरूवेला गए तथा वहां शिष्य बनाए। उरूवेला से वह मगध की राजधानी पहुंचे अपने धर्म का प्रचार करते हुए बहुत बड़ी संख्या में शिष्य बनाए जिनमें मोद्गलायन व सारिपुत्र प्रमुख थे। इनके अतिरिक्त मगध का शासक बिम्बिसार भी उनका शिष्य बन गया और बुद्ध को बेलुवन विहार दान में दिया। राजगृह का ही एक व्यापारी अनाथपिण्डक भी महात्मा बुद्ध का शिष्य बन

गया। जिसने जेतवन विहार दान में दिया। यद्यपि महात्मा बुद्ध ने अपने धर्म की आधारशिला मगध में रखी थी। किन्तु बौद्ध धर्म की वास्तविक प्रगति कोशल राज्य में हुई। कोशल का राजा प्रसेनजित महात्मा बुद्ध का शिष्य बन गया तथा कोशल की राजधानी श्रावस्ती में ही भगवान बुद्ध ने अपने जीवन के सर्वाधिक वर्षावास व्यतीत किए। श्रावस्ती में ही उन्होंने अंगुलिमाल नामक डाकू को अपना शिष्य बनाया। इसके बाद महात्मा बुद्ध वैशाली गए वहां की प्रसिद्ध राजनर्तकी आम्रपाली उनकी शिष्या बन गई। अपने परम् शिष्य आनन्द के कहने प्रजापति गौतमी ही सर्वप्रथम संघ में शामिल हुई। महात्मा बुद्ध आजीवन, अंग, मगध, काशी, मल्ल, शाक्य, वज्जि, कोशल, आदि नगरों मे घूम–घूम कर अपने उपदेश देते रहे।

जीवन के अन्तिम वर्ष में वे अपने शिष्य चुन्द (लोहार) के यहाँ पावा पहुंचे। यहां सूकरमाद्दव भोज्य सामग्री खाने से अतिसार रोग से पीड़ित हो गए। फिर वे पावा से कुशीनगर चले गए और वहीं पर सुभद्दको अन्तिम उपदेश दिया और 80 वर्ष की अवस्था में कुशीनगर में ही उनकी मृत्यु हो गई जिसे बौद्ध ग्रन्थों मे महापरिनिर्वाण कहा गया। महात्मा बुद्ध के अवशेषों को उनके शिष्यों ने परस्पर बाँट लिया तथा उनकी स्मृति में उनके अवशेषों पर स्तूप बनवाए। महात्मा बुद्ध के जीवनकाल की घटनाओं से संबंधित स्थानों को अष्टमहास्थान कहा जाता है– लुम्बनी (कपिलवस्तु), बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर,श्रावस्ती, संकास्य, राजगृह, वैशाली। इनमें से कपिलवस्तु, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती और संकास्य की गणना उत्तर प्रदेश के बौद्ध तीर्थ स्थलों में की जाती है।

मुख्य स्थल

चौखण्डी स्तूप

सारनाथ के मुख्य स्मारक स्थलों से लगभग 0.8 कि0 मीटर दक्षिण पश्चिम में ईटों का एक ऊँचा थूहा (टीला) है, जो चौखण्डी स्तूप के नाम से जाना जाता है। चीनी यात्रा युवान–च्वांग ने इसकी ऊचाई 91.44 मीटर बताई है। आज इसके ऊपर एक अठपहल बुर्जी बनी है जिसे मुगल बादशाह अकबर की आज्ञानुसार राजा टोडरमल के पुत्र राजा गोवर्धन ने सन् 1588 ई0 में बनवाया था। यहाँ से प्राप्त अभिलेख में सम्राट हुमायूँ द्वारा (यहाँ) एक रात व्यतीत किये जाने का वर्णन है, जिसकी यादगार के रूप में इस बुर्ज का निर्माण किया गया था। संभवतः सबसे ऊपर की मंजिल की खुली छत पर कोई प्रतिमा स्थापित की गई थी। गुप्त काल में इस प्रकार की इमारत को 'त्रिमेधि स्तूप' कहते थे। इस स्तूप से धर्मचक्र मुद्रा वाली बुद्ध मूर्ति और गुप्तकालीन अभिलेख मिले थे, जो गुप्तकाल तक इसके विशाल स्तूप बन जाने को दर्शाते हैं।

धर्मराजिक स्तूप

आजकल इस स्तूप की केवल बुनियाद बची है, क्योंकि 1794ई0 में बाबू जगत सिंह के द्वारा यह नष्ट हो गया था। इस स्तूप का क्रमशः छः बार परिवर्द्धन और संस्कार हुआ। अशोक निर्मित मूल स्तूप का व्यास 13.49 मीटर था। इसका पहला संस्कार कुषाणकाल में और दूसरा 5वीं या 6ठीं शताब्दी में हुआ था, जब इसके चारों ओर 4.6 मीटर चौड़ा प्रदक्षिणा पथ जोड़ा गया था। तीसरी बार संस्कार संभवतः हर्ष के राज्यकाल (सातवीं शताब्दी) में हुआ था, जब स्तूप की कुर्सी तक पहुंचने के लिए चारों दिशाओं में एक–एक एकाश्मक सोपान लगा दिये गये। चौथा परिवर्द्धन 9वीं–10वीं शताब्दी में औ पांचवा महीपाल के समय में (1026ई0) हुआ था। स्तूप का अंतिम व छठा संस्कार 12वीं शताब्दी में हुआ, जब कुमारदेवी ने अपना धर्मचक्र–जिन–महाविहार बनवाया था। सारनाथ की दो प्रसिद्ध मूर्तियाँ इसी स्तूप के पास से मिली हैं, जो यहाँ की सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियाँ मानी जाती है। इनमें से पहली कनिष्क शासन कालीन विशाल बोधिसत्व प्रतिमा है और दूसरी धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा वाली भगवान बुद्ध की अत्यन्त सुन्दर मूर्ति है।

मूलगन्ध कुटी

धर्मराजिक स्तूप से 18.29 मीटर उत्तर की ओर मूलगन्ध कुटी है। यह ईंट और चूने से निर्मित है और कहीं–कहीं और भी पुरानी इमारतों के उकेरे हुए पत्थर लगा दिए गए हैं। कला की शैली से प्रतीत होता है कि यह गुप्त–काल का निर्माण है।

धमेख स्तूप

सारनाथ के स्मारकों में सबसे ठीक अवस्था में प्राप्त होने वाला स्तूप धम्मेख ही है। इसका प्राचीन नाम धर्मचक्र स्तूप था। यह ठोस गोलाकार बुर्ज की तरह है। 11.20 मीटर की ऊँचाई तक यह सुन्दर अलंकृत शिलापट्टों से ढँका हुआ है। यह स्तूप गुप्तकाल के शिल्पियों की कला का प्रत्यक्ष उदाहरण है।

अशोक स्तंभ

मूलगन्ध कुटी के पश्चिम की ओर अशोक कालीन प्रस्तर स्तंभ हैं। यह किसी समय लगभग 15.25 मीटर ऊंचा और सिंह शीर्षक (ऊपरी सिरा सिंह के आकार वाला) था। अब मात्र 2.03 मीटर का खण्ड ही अपने मूल स्थान पर खड़ा रहा गया है, शेष टुकड़े पास ही पड़े है। स्तंभ पर कुल तीन अभिलेख उत्कीर्ण हैं। पहला ब्राह्मी लिपि में अशोक का लेख हैं, जिसमें उसने आदेश दिया था कि संघ में फूट डालने व संघ की निंदा करने वाले भिक्षु या भिक्षुणी को सफेद कपड़े पहना कर संघ से बाहर कर दिया जाएगा। दूसरा लेख कुषाणकाल का है और राजा अश्वघोष के 40वें वर्ष में लिखा गया था। तीसरा लेख गुप्त काल का है और उसमें सम्मितिय शाखा के आचार्यो का उल्लेख है।

सिंह–शीर्षक

इसकी ऊंचाई 2.31 मीटर है। इसे एक ही पत्थर से काट कर बनाया गया हैं यह नीचे से ऊपर तक चार भागों में बंटा हुआ है। (1) पलटी हुई कमल की पँखुड़ियों से ढँका हुआ कुंभिका भाग (2) गोल अंडकार भाग जिसमें चार धर्मचक्र व चार पशु क्रमशः हाथी, वृषभ(सांड़), अश्व व सिंह बने हुए हैं (3) उससे ऊपर पीठ सटाकर उकडूँ बैठे हुए चार दिशाओं में मुँह किये चार सिंह (4) सबसे ऊपर एक धर्मचक्र था जिसमें 32 अरे या डंडे थे।

बोधिसत्व प्रतिमा

इसे कनिष्क के राज्यकाल के तीसरे वर्ष में मथुरा के त्रिपिटकाचार्य भिक्षु बल ने सारनाथ में भगवान बुद्ध के चंक्रमण स्थल पर स्थापित किया था। यह मथुरा के लाल पत्थर की बनी है। इसके ऊपर एक बड़ा छत्र लगा है। इसके बीच में खिला कमल और चारों ओर मॉगलिक चिन्ह अंकित हैं। इस मूर्ति पर एक अभिलेख भी उत्कीर्ण है।

धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा वाली मूर्ति

गुप्तकालीन कला ने भारतीय कला के विकास में विशेष योगदान दिया है। गुप्तकाल में सारनाथ कला का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया था। इसके बेहतरीन उदाहरण के रूप में धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा वाली मूर्ति को देखा जा सकता है, जिसकी मुख–मुद्रा में बुद्ध के अनुत्तर ज्ञान या शान्ति की छाप है। मूर्ति के चारों ओर बने गोलाकर भाग में उत्कृष्ट कोटि का अलंकरण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

उत्तर प्रदेश के बौद्ध तीर्थ स्थल सारनाथ का ऐतिहासिक अध्ययन करना ही इस शोधपत्र का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

इस शोधपत्र का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि बौद्ध तीर्थ स्थलों का अध्ययन भारतीय कला और संस्कृति के अध्ययन के लिए अपरिहार्य है। इस शोध से उत्तर प्रदेश में स्थित भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़े स्थलों के संबंध में जानकारी तो प्राप्त होती ही है साथ ही साथ बौद्ध स्मारको, कलाकृतियों तथा बौद्ध धर्म से जुड़ी शिक्षा (धार्मिक सहिष्णुता) सामाजिक बन्धुता, करूणा, दया मानवीय गरिमा और स्वावलम्बन, की भी जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल, वी0एस0,सारनाथ आर्किलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1980*
2. *कनिंघम, अलेग्जेण्डर दी एन्शियन्ट जियोग्राफी ऑफ इण्डिया, भारतीय पब्लिशिंग हाऊस, वाराणसी, 1976*
3. *भिल्सा टॉप्स, इण्डोलोजिकल बुक हाउस, वाराणसी, 1966*
4. *कुमार, धीरेन्द्र भारतीय बौद्ध केन्द्र, जानकी प्रकाशन पटना, प्रथम संस्करण, 2003*
5. *लाल, अंगने उत्तर प्रदेश के बौद्ध केन्द्र, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, प्रथम संस्करण 2006*
6. *चटर्जी, आचार्य सीताराम दी कैपिटल ऑफ बुद्धिज्म सारनाथ, ओरियण्ट पब्लिशर्स, वाराणसी, 1968.*
7. *दहेजा, विद्या, अर्ली बुद्धिस्ट रॉक टैम्पल्स, थेम्स एण्ड हडसन लि0, लन्दन, 1972*
8. *पाटिल, डी0आर0 कुशीनगर, आर्किलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1981*
9. *विजयटुंगा, जे0 बोध–गया, पब्लिकेशन डिविजन, मिनिस्ट्री ऑफ इंफारमेशन एण्ड ब्रोडकास्टिंग, दिल्ली, 1956 लुबिनि, पब्लिकेशन डिविजन, ओल्ड सैक्ट्रीऐट, दिल्ली, 1956*
10. *वेंकटरमय्या, एम0 श्रावस्ती, आर्किलोजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1981*
11. *राकेश, रामस्वरूप प्राचीन बौद्ध स्थल, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली–110063, 1998.*
12. *सरकार, एच0 स्टडीज इन अर्ली बुद्धिस्ट आर्किटेक्चर ऑफ इण्डिया, मुन्शीराम मनोहरलाल, दिल्ली, 1966*
13. *सांकृत्यायन, राहुल जेतवन–श्रीवस्ती, भारतीय महाबोधि सोसायटी, श्रावस्ती बहराईच, उत्तर प्रदेश, 1985*
14. *सिंह, प्रियसेन भारत के प्रमुख तीर्थ स्थल ईस्टर्न बुक लिकर्स, दिल्ली प्रथम संस्करण, 1993*
15. *श्रीवास्तव, के0एम0 बुद्धाज़ रैलिक्स फरॉम कपिलवस्तु, आगम कला प्रकाशन, दिल्ली, 1986*